❍ Year : 1 ❍ Issue : 2 ❍ November 2016 ❍ ISSN : 2456-0898

GLOBAL THOUGHT

ग्लोबल थॉट

(MULTI DISCIPLINE BILINGUAL RESEARCH JOURNAL)

(An International Refereed Quarterly Research Journal)

(A Scholarly Peer Reviewed Journal)

Patron :

Prof. M.M. Agrawal

(Former Dean, Arts Faculty & H.O.D. Sanskrit, University of Delhi, Delhi)

Prof. D.S. Chauhan

(Former H.O.D. Sanskrit, Magadh University, Bodhgaya, Bihar)

स्वामी/मुद्रक/प्रकाशक रूपेश कुमार चौहान द्वारा 47, ए-3 ब्लॉक, गली नं. 5, धर्मपुरा एक्सटेंशन, (नजदीक संकट मोचन मंदिर), पी.एस. नजफगढ़, दिल्ली से प्रकाशित एवं डॉल्फिन प्रिंटोग्राफिक्स, 4 ई/7, पाबला बिल्डिंग, झंडेवालान् एक्सटेंशन, नई दिल्ली में मुद्रित।
सम्पादक-रूपेश कुमार चौहान
Ph. 09555222747, 09540468787, 7011805809

प्रकाशनार्थ सूचना

* लेखक से अनुरोध है कि शोध-पत्र वॉकमैन चाणक्य 905 या क्रुतिदेव फॉन्ट में वर्ड या पेजमेकर में टाइप (टङ्कण) कराकर शोध-पत्रिका के ई-मेल पर प्रेषित करें।
* शोध-लेख **हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषा में** न्यूनतम 1500 शब्द एवं अधिकतम 5000 शब्द तक मान्य है तथा इसके साथ लेखक का पद-नाम के साथ स्वयं की फोटो (छवि-चित्र) अत्यन्त अनिवार्य है।
* प्रकाशनार्थ प्राप्त लेख सलाहकार परिषद् एवम् संपादक मण्डल की अनुमति के पश्चात् स्तरीय होने पर ही प्रकाशित होगा।
* लेख में यदि चित्र का प्रयोग हुआ है तो उसे भी अवश्य प्रेषित करें।
* **'ग्लोबल थॉट'** किसी भी तरह के परामर्श का स्वागत करती है, इसलिए अपनी प्रतिक्रिया अवश्य दें।
* यह स्पष्ट किया जाता है कि शोध पत्र में प्रस्तुत तथ्य शोध लेखक के अपने विचार हैं तथा इसमें सलाहकार परिषद् एवं सम्पादक मण्डल के विचारों की सहमति होना आवश्यक नहीं है। अत: लेख के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी है।
* शोध-पत्रिका की किसी भी सामग्री को प्रकाशक एवं मुद्रक की जानकारी के बिना अन्यत्र प्रकाशन अनुचित होगा।
* अपेक्षित आर्थिक सहयोग अथवा अंशदान के लिए हम आपके अत्यंत आभारी रहेंगे।
* **कृपया लेख के साथ अपनी पासपोर्ट साइज की फोटो अवश्य भेजें।**

© सर्वाधिकार सुरक्षित

सामान्य शुल्क		सदस्यता शुल्क	
वैयक्तिक शुल्क (एक प्रति)	**– ₹200**	**संस्थागत सदस्यता शुल्क (वार्षिक)**	**– ₹1500**
संस्थागत शुल्क (एक प्रति)	**– ₹400**	**पञ्च वार्षिक शुल्क**	**– ₹6000**
वैयक्तिक वार्षिक शुल्क (दिल्ली हेतु)	**– ₹800**	**आजीवन सदस्यता शुल्क**	**– ₹15000**
सदस्यता शुल्क व्यक्तिगत (वार्षिक) (दिल्ली से बाहर के लिए)	**– ₹1200**		

पत्र-व्यवहार का पता :
मकान नं.-41, सूरज नगर (दुर्गा मंदिर के सामने),
आजादपुर, दिल्ली-110033

सलाहकार परिषद् :

- **प्रो. अरविन्द कुमार पाण्डेय**
  (पूर्व कुलपति, कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा)
- **महामहोपाध्याय प्रो. वेद प्रकाश शास्त्री**
  (पूर्व उप-कुलपति, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार)
- **प्रो. शंकर दयाल द्विवेदी**
  (संस्कृत विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय)
- **प्रो. राम सरेख सिंह**
  (पूर्व विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोधगया)
- **प्रो. मोहम्मद मंसूर आलम**
  (अध्यक्ष, उर्दू विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोध गया)
- **प्रो. राम भरत सिंह**
  (पूर्व विभागाध्यक्ष, राजनीति शास्त्र, मगध विश्वविद्यालय, बोधगया)
- **डॉ. सोहनपाल सुमनाक्षर**
  (राष्ट्रीय अध्यक्ष, भारतीय दलित साहित्य अकादमी एवं प्रसिद्ध दलित चिंतक)
- **डॉ. विक्रमादित्य राय**
  (अध्यक्ष, समाज-शास्त्र विभाग, डी.ए.वी.पी.जी. कॉलेज, (बी.एच.यू.) वाराणसी
- **डॉ. इन्द्र नारायण सिंह**
  (बौद्ध अध्ययन विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय)
- **प्रो. सत्यदेव पोद्दार**
  (इतिहास विभाग, त्रिपुरा केन्द्रीय विश्वविद्यालय, त्रिपुरा)
- **प्रो. काशीनाथ जेना**
  (राजनीति-शास्त्र विभाग, त्रिपुरा केन्द्रीय विश्वविद्यालय, त्रिपुरा)

सम्पादक मंडल :

- **डॉ. गजेन्द्र सिंह**
  (एसोसिएट प्रोफेसर, अफ्रीकन स्टडीज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली)
- **डॉ. शाहिद तस्लीम**
  (असिस्टेंट प्रोफेसर, उज्बेक भाषा विशेषज्ञ, जामिया मिलिया इस्लामिया, दिल्ली)
- **डॉ. रसाल सिंह**
  (असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, किरोड़ीमल कॉलेज, दिल्ली)
- **डॉ. मनोज कुमार सिन्हा**
  (असिस्टेंट प्रोफेसर, वाणिज्य विभाग, पीजीडीएवी महाविद्यालय (प्रात:), दिल्ली)
- **डॉ. अरविन्द कुमार मीणा**
  (असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, वेंकटेश्वर कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय)
- **अजय कुमार**
  (असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, सत्यवती कॉलेज (प्रात:), दिल्ली विश्वविद्यालय)
- **डॉ. सुशील एम. तिवारी**
  (असिस्टेंट प्रोफेसर (अतिथि), वनस्पति विज्ञान विभाग, दयाल सिंह कॉलेज (प्रात:)

सम्पादक :
डॉ. रूपेश कुमार चौहान
मो. 9555222747, 9266319639

उप सम्पादक :
डॉ. राजेश कुमार
मो. 9555666907, 8527907638

प्रबंध सम्पादक :
ठाकुर प्रसाद चौबे
मो. 9810636082

विधि विशेषज्ञ :
अरुण कुमार शुक्ला

ग्राफिक डिजाइनर :
कवल मलिक
जे.डी. कंप्यूटर्स, मो. 9818455819

- सभी पद अवैतनिक एवं परिवर्तनीय हैं।
- **'ग्लोबल थॉट'** से संबंधित सभी विवादास्पद मामले केवल दिल्ली न्यायालय के अधीन होंगे।
- सारे भुगतान मनीआर्डर : चेक/ बैंक ड्राफ्ट **'वाक् सुधा'** के नाम से किए जाएं। कृपया दिल्ली से बाहर के चेक में बैंक कमीशन के 35.00 रुपये अतिरिक्त जोड़ें।

अनुक्रमणिका

सम्पादकीय 5
प्राचीन विधि विशेषज्ञ पराशर 6
डा. धनपति देवी कश्यप
संस्कृत एवं भारतीय प्राचीन शिक्षा पद्धति 10
डॉ. करणसिंह चौहान
रैगर जाति के विकास में अखिल भारतीय रैगर महासभा (ABRM) का योगदान 14
संजय कुमार
रीतिकालीन साहित्य का समाजशास्त्रीय अध्ययन (गृहस्थ जीवन के संदर्भ में) 24
रीना
स्त्री विमर्श : प्रथा और व्यथा 28
मंजु रानी
योगदर्शन में वर्णित समाधि 31
डॉ. वेदनिधि
A Survey of the Four Wheeler's Sellers (Marketers) & Buyers (Consumers) Behaviour of Gautam Budha Nagar District Area ---------- 33
Naveen
उर्दू-हिंदी कहानियों में नए आयाम 40
आलिया
भारत में बौद्ध विद्वानों का आगमन (पांचवीं शताब्दी उपरान्त) 43
एम.एम. रहमान
नारी मुक्ति की अवधारणा और उसके विविध आयाम 45
डा. चन्द्रशेखर राम
नरसिंहपुर जनपद (म.प्र.) के कृषि के परिवर्तित क्षेत्र की संभावनाएँ, नियोजन एवं सुझाव 49
डॉ. मार्ग्रेट युसूफ
'झीनी-झीनी बीनी चदरिया' में अभिव्यक्त बुनकर समाज का यथार्थ 57
नवनीत कुमार राय
बौद्ध साहित्य – एक अवलोकन 60
डॉ. कामाख्या नारायण तिवारी
साधारणीकरण का सिद्धान्त 63
डॉ. रवीन्द्र कुमार
ब्रज एक विहंगम दृष्टि : विभिन्न सम्प्रदायों के परिप्रेक्ष्य में 67
मालती
बौद्ध संगीतियां एवं उनका महत्व 71
डॉ. कामाख्या नारायण तिवारी
'उर्वशी' की रचना-प्रक्रिया और 'दिनकर की डायरी' 74
ज्योत्स्ना कुमारी
हिन्दी का बाल-साहित्य : चुनौतियाँ और संभावनाएँ 78
अजीत कुमार
The Concept of Peace in the Buddhist World View ----- 82
Dr. Nirja Sharma
मिथिला की शक्ति परम्परा में तारा : एक सांस्कृतिक विश्लेषण 85
डॉ चन्द्रशेखर पासवान
स्मृतिकार देवल : एक परिचय 91
डा. धनपति देवी कश्यप
नारी समाज के पुनर्जागरण की जरूरत 96
डॉ. पुष्पांजलि
अलंकार तथा रीति 100
डॉ. काकोली राय
कबीर-काव्य का दार्शनिक पक्ष 103
अजीत सिंह
दौसा (राज.) जिले में मानव संसाधन विकास एवं रोजगार की संभावनायें अध्ययन क्षेत्र का मुख्य निष्कर्ष एवं सुझाव 109
ललतेश जाँगिड
महिला उपन्यासकार और नारी अस्मिता 112
डॉ. सरिता कश्यप
महात्मा गाँधी जी की पर्यावरणीय दृष्टि 116
उमेश कुमार
मनुस्मृति में नारी चेतना 119
डॉ. सुशील कुमारी
Playing inequality : A close look at Bollywood ---------- 122
Vaishali Sharma
स्त्री सशक्तिकरण चुनौतियां और सम्भावनाएं 127
उमेश कुमार
Living Affinity ---------- 130
Thuktan Negi
Rights Through Reels: Promoting Education of Children with Disabilities through Cinema ---------- 132
Vaishali Sharma
प्राचीन भारतीय इतिहास में श्रेणी का महत्व 137
कुमार पंकज
समाजचेता कवि : धूमिल 142
डॉ. अनिल कुमार
नारी सशक्तिकरण की मुहिम ने भारतीय नारी को कितना सशक्त किया है? 146
आशा यादव
आधुनिक हिन्दी पद्य साहित्य में उदात्त मूल्य 148
राजकुमार यादव
शैलीविज्ञान का अन्य विषयों से सम्बंध 150
जसपाली चौहान
आधुनिक संस्कृत मुक्तकाव्यों में धर्म का स्वरूप 154
कुमारी नन्दिनी
Redundancy and Significance of Deletion Transformation: An exploratory case study of Hindi/Urdu ---------- ***157***
Vijay Kumar Kaul
आधुनिक हिन्दी गद्य साहित्य में उदात्त मूल्य 164
राजकुमार यादव
Developing The 'Golden Gateway' For Developing India- Analysis of the Chabahar Port ---------- 167
Pankaj Choudhary
नई कविता में लघुमानव का सिद्धान्त और लक्ष्मीकांत वर्मा की काव्यलोचना संबंधी दृष्टि 172
डॉ. देव कुमार
सामाजिक यथार्थबोध और हिंदी उपन्यास 177
रीनू गुप्ता
टी.एस. इलियट का मूर्त-विधान सिद्धान्त 182
डॉ. लालजी
स्त्री अस्मिता का सशक्त दस्तावेज- ध्रुवस्वामिनी 185
डॉ. वीणा शर्मा
फिल्मों में 'इन फिल्म एडवरटाइजिंग' 188
डॉ. ममता
Re-discovering the Self through Child Drama ---------- 192
Dr. Charru Sharma

सम्पादकीय

ग्लोबल थॉट का नया अंक प्रस्तुत करते हुए अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है। नया साल, नए तेवर, नई चुनौतियां इस अंक की विशेषता है। नए कलेवर और तेवर के साथ ग्लोबल थॉट में जो बदलाव और परिवर्तन देख रहे हैं वह वास्तव में प्राकृतिक विकासक्रम है। ग्लोबल थॉट ने कभी भी स्वास्थ्य और नवाचारी विचारों से परहेज नहीं किया।

युवा शोधार्थियों और अहिन्दी भाषी शोधार्थियों की विशेष सुविधा हेतु ग्लोबल थॉट को द्विभाषी बनाया गया है। इसमें हिन्दी और अंग्रेजी भाषा में शोध पत्र प्रकाशित किये जा सकते हैं। समय की मांग और जरूरतों के अनुसार अकादमिक बदलाव व जन आकांक्षा के अनुरूप इसके तेवर और कलेवर में बदलाव लाया गया है।

साहस, संकल्प और निर्भयता के साथ ग्लोबल थॉट ने यात्रा शुरू की है और वह उत्तरोत्तर और मुखर हो रही है। जनविरोधी शक्तियों और अकादमिक जगत् के मठाधीशों से भी ग्लोबल थॉट को खूब आलोचना झेलनी पड़ी है। बिना डर, भय और प्रलोभन के ग्लोबल थॉट अकादमिक, सांस्कृतिक और नैतिक कायाकल्प की महत्वाकांक्षा को लेकर दलित, पिछड़े, वंचितों के साथ खड़ी रही है और आगे की भी संरक्षणवादी सोच से किनारा करते हुए इन वर्गों की पैरोकारी करती रहेगी।

ग्लोबल थॉट में सबको जोड़ने वाला संतुलनकारी गुण है जो इसकी विशिष्टता है। यही कारण है कि एक बार ग्लोबल थॉट का पाठक होने पर सदा के लिए इसका होकर रह जाता है। एक प्रसिद्ध थीम सांग है 'मेरा देश बदल रहा है, आगे बढ़ रहा है।' उसी की तर्ज पर ग्लोबल थॉट के बारे में कहा जा सकता है कि थोड़ी-थोड़ी सी ही सही, धीरे-धीरे ही सही ग्लोबल थॉट बदल रही है और निरन्तर आगे ही आगे बढ़ रही है।

शब्द ब्रह्म है। शब्द में अद्‌भुत शक्ति समायी है। एक-एक शब्द और उसको जोड़ने से वाक्य बनता है, जिससे विचारों की अभिव्यक्ति संभव हो पाती है। यह पाठक पर निर्भर करता है कि शब्दों से सकारात्मक विचारों का सृजन करते हैं या फिर नकारात्मक। ग्लोबल थॉट हमेशा सकारात्मक सोच के साथ आगे बढ़ रही है, जिससे उसका व्यापक प्रभाव बौद्धिक जगत् पर पड़ता दिखाई दे रहा है। देश के बौद्धिक व सांस्कृतिक विमर्श में ग्लोबल थॉट ने हस्तक्षेप किया है। जेएनयू से लेकर इलाहाबाद विश्वविद्यालय तक दिल्ली विश्वविद्यालय से लेकर त्रिपुरा विश्वविद्यालय के साथ-साथ देश की सीमाओं को लांघकर दक्षिण कोरिया तक अपनी मुकाम पाया है।

शोधपरक लेख और संसाधनों एवं आर्थिक सहयोग तक के लिए जन सहयोग पर अवलम्बित होकर ग्लोबल थॉट ने अकादमिक जगत् के तथा समाज के उन तबकों की आवाज को बुलंद किया है, जिसकी आवाज मुख्यधारा की शोध पत्रिका में दरकिनार कर दी जाती है।

मुख्यधारा की स्थापित शोध पत्रिका की विश्वसनीयता संदिग्ध होती जा रही है जन सरोकारों के लिए उसमें कोई जगह नहीं है, क्योंकि उस पर विचारधारा, पंथ, संप्रदाय, पूंजी और बाजार के बहुआयामी दबाव हैं। इसके विपरीत समाज की बेहतरी के लिए सक्रिय लोगों का सहयोग ही ग्लोबल थॉट की ताकत है।

इस अवसर पर अपने सलाहकार परिषद और सम्पादक मंडल के सभी ख्यातिप्राप्त विद्वानों का आभार व्यक्त करता हूँ जिसके सतत् मार्गदर्शन के कारण ग्लोबल थॉट ने यह मुकाम हासिल किया है।

- डॉ. रूपेश कुमार चौहान